समाज को लौटाना

समीरा वास

जब समूह में नागरिकता शिक्षा पर एक लेख लिखने की ख़बर आई, तो मैं इस बारे में सोचने लगी। जल्द ही मुझे एक मेंटर मिले जिन्होंने मुझे *'द बास्टियन'* *(Bastion)* में छपे एक लेख के माध्यम से अपेक्षित जानकारी देते हुए समझाया। लेख स्कूलों में नागरिक शिक्षा और हमारे देश में पाठ्यचर्या बनाम वास्तविकता के अन्तर पर केन्द्रित था। इस लेख ने निश्चित तौर से नागरिकता शिक्षा पर मेरी समझ बनाई, लेकिन मैं अभी भी यह नहीं समझ पा रही थी कि यह सामान्य तौर पर हमारी ज़िन्दगी से कैसे जुड़ा है।

ऐसा लग रहा था कि पूरी कायनात मुझे नागरिक शिक्षा के बारे में और जानने के लिए आगे बढ़ा रही थी। अगले ही दिन मुझे एक कक्षा में बैठने का मौक़ा मिला। उस कक्षा में एक प्रसिद्ध शिक्षिका कक्षा सातवीं के बच्चों को कर्नाटक के एक क्रान्तिकारी 'मायलारा महादेवप्पा' (जिन्होंने अँग्रेज़ी शासन के खिलाफ़ संघर्ष किया था) के बारे में पढ़ा रही थीं। मुझे इन शिक्षिका से कई बार मुलाक़ात करने का मौक़ा मिला है। उनके पास कहानियों और उपमाओं का प्रचुर भण्डार है। उन्होंने बताना शुरू किया कि जब मायलारा ने अँग्रेज़ों द्वारा निर्मित टोपी पहनी तो उन्हें विदेशी जैसा एहसास हुआ और उन्होंने तुरन्त टोपी उतारकर फेंक दी। फिर वे विदेशी और स्वदेशी के बारे में समझाने लगीं। इसके बाद उन्होंने बच्चों को एक पौधा उगाने, उसका पालन-पोषण करने, उसकी देखभाल करने और अन्त में उससे एक सुन्दर फूल को खिलते हुए देखने की कल्पना करने को कहा।

शिक्षिका स्वदेशी की भावना के साथ आने वाली अपनेपन की भावना पर रोशनी डालना चाहती थीं। उन्होंने बच्चों से यह बताने के लिए कहा कि वे ख़ुद से उगाए हुए फूलों के मुक़ाबले बाज़ार से ख़रीदे गए फूलों के बारे में क्या महसूस करते हैं।

इसके बाद शिक्षिका ने ज़िम्मेदारी की परिभाषा समझाने के लिए एक और कहानी का उपयोग किया। यह कहानी ऐसी थी जिससे हर कोई जुड़ सकता था। उन्होंने एक आदमी के बारे में बताया जिसने भारत के एक सरकारी स्कूल में पढ़ाई की, लेकिन अन्त में बेहतर जीवन जीने के लिए किसी दूसरे देश चला गया। इसके बाद उन्होंने विद्यार्थियों से पूछा कि क्या वह किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने देश के संसाधनों का भरपूर इस्तेमाल किया हो, लेकिन बदले में कुछ वापिस नहीं दिया। शिक्षिका ने हरेक विद्यार्थी को एक बच्चे के रूप में, एक भाई-बहन के रूप में और एक विद्यार्थी के रूप में अपने अभिभावकों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में सोचने के लिए कहकर कक्षा समाप्त कर दी।

लेकिन कक्षा यहीं समाप्त नहीं हुई। बच्चे आगे आए और उन्होंने अपनी शिक्षिका को बाथरूम जाने, उनकी थाली साफ़ करने, लंच बॉक्स खोलने और दूसरी कक्षा में जाने से पहले हर ज़रूरी सामान जुटाने में उनकी मदद की। यह बात बिना सन्दर्भ के थोड़ी अजीब लग सकती है—दरअसल वह शिक्षिका विकलांग हैं और उन्हें एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए मदद की ज़रूरत पड़ती है। हैरानी की बात यह है कि उनकी कक्षा के बच्चों को उनकी मदद करने के लिए कभी भी विशेष रूप से नहीं कहा जाता। वे अपनी मर्ज़ी से आगे आते हैं और बारी-बारी से अपनी शिक्षिका की बहुत ही व्यवस्थित तरीक़े से मदद करते हैं।

इन शिक्षिका ने कई पुरस्कार जीते हैं। उनकी एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वह जो करने को कहती हैं, उस पर ख़ुद भी अमल करती हैं। और ऐसा वह इस तरह से करती हैं जिससे दूसरों को अच्छा करने और बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा व प्रोत्साहन मिले। शिक्षिका के सेवानिवृत्त होने में अभी सात महीने बाक़ी हैं। उन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद अपने गृहनगर जाकर अपने बचपन के विद्यालय में काम करने की योजना बनाई है। वह बताती हैं कि उनके गृहनगर में स्थित सौ साल पुराने उस विद्यालय के प्रति उनकी एक ज़िम्मेदारी है, क्योंकि आज वह जो भी हैं उसी विद्यालय के कारण हैं। इसलिए वह अपने शिक्षकों, गृहनगर और समुदाय की बहुत एहसानमन्द हैं।

यह शिक्षिका हमेशा मुझे एक इन्सान से कुछ ज़्यादा बनने के लिए प्रेरित करती हैं। उनमें भाषा, गणित और सामान्य बातचीत द्वारा अपने विद्यार्थियों में अच्छे मूल्यों को पैदा करने की क्षमता है। मैंने देखा कि अच्छे मूल्यों के होने से किस तरह बच्चों के व्यवहार में बदलाव आते हैं, जो आगे चलकर उनके सीखने की प्रक्रिया को एक सकारात्मक दिशा देते हैं। उनकी कक्षा में बच्चे समानुभूति रखने वाले, समस्याओं को हल करने वाले व मुखर हैं। वे साथ मिलकर काम करते हैं और उन्हें उनकी कक्षा में पढ़ने में मज़ा आता है। इन बच्चों

के पास एक ऐसी रोल मॉडल हैं जो वही करती हैं, जिसे वह दूसरों को करने को कहती हैं। ज़िम्मेदारी, ईमानदारी, समाज में अपना योगदान देना जैसे शब्दों को सिखाना अधिक प्रभावी तब ही होगा जब आप इन्हें बच्चों के लिए प्रासंगिक बनाकर, भावनाओं से जोड़कर और सबसे महत्त्वपूर्ण बात कि रोज़ाना आप जो दूसरों को करने को कहते हैं उस पर धैर्यपूर्वक और ख़ुशी-ख़ुशी अमल करके उन्हें सिखाएँ।



समीरा वास ज़िला संस्थान, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बेंगलूरु में स्रोत व्यक्ति के तौर पर कार्यरत हैं। उन्हें रचनात्मक कलाएँ और बच्चों के साथ काम करना पसन्द है। वह बच्चों के साथ काम करने और उनके मन को समझने के लिए रचनात्मक तरीक़ों को खोजने के गहन प्रयास में लगी हुई हैं। उनसे sameera.vasa@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

हमने यह नियम बनाया था कि शिक्षक सहित, हर कोई बोलने के लिए अपनी बारी का इन्तज़ार करेगा, अपना हाथ उठाएगा, और जब कोई और बोल रहा हो तो बीच में टोकेगा नहीं। हर एक की बात सुनी जाएगी और अगर विचारों में मतभेद हों तो हम कारणों को सुनेंगे और बच्चों को तय करने देंगे कि वे एक-दूसरे से सहमत होंगे या नहीं। इस प्रणाली से उन विद्यार्थियों को मदद मिली जो सोचते थे कि वे सब कुछ जानते हैं और हमेशा पहले उत्तर देते थे। अब उन्होंने अपनी बारी का इन्तज़ार करना, दूसरों की राय का सम्मान करना और अपनी ग़लतियों को स्वीकार करना सीखा।

- पूजा विश्नोई, स्कूल : समाज का एक लघु रूप, पेज 77